RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मल्टीमीडिया और सोशल नेटवर्क के प्रति विद्यार्थियों पर प्रभाव

Pateliya Bhulabhai Sufarabhai

Research scholar

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
मल्टीमीडिया और सोशल नेटवर्क
उच्च माध्यमिक

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा दाहोद (गुजरात) के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करने हेतु विगत सत्र के परीक्षा–परिणाम के प्राप्ता कों को आधार माना गया है। इस निमित प्राप्तांकों की दत्त संकलन सूची तैयार की गई है। शोधकार्य में केवल तथ्यों को एकत्र कर लेने से ही अध्ययन विशय का वास्तविक अर्थ, कारण तथा परिणाम स्पष्ट नहीं हो सकता है जब तक कि उन एकत्रित तथ्यों को सुव्यस्थित करके उनका विष्लेशण व व्याख्या न की जाये।

प्रस्तावना

21 वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये आयामों द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खडा कर दिया जिसमें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है। अपने शुरूआती दौर में सोशल नेटवर्क एक सामान्य सी दिखने वाली साईट होती थी और इसके जरिए उपयोगकर्ता एक दूसरे से चैटरूम के जरिए बात करते थे और अपनी निजी जानकारी व विचार एक दूसरे के साथ बांटते थे। 90 के दर्शक से इन साईट्स में बदलाव आया और इसमें फोटो, वीडियो, संगीत शेयरिंग, ऑनलाइन गेम्स, विज्ञान, कला, प्लानिंग, चैटिंग, ऑनलाइन डेटिंग जैसी तमाम सुविधाएँ बढ़ी।

सोशल नेटवर्क से लोगों में जन आन्दोलन एवं जनजागरण की समस्त आकांक्षाओं और सम्भावनाओं का उदय हुआ, यह भारत दोष के लिए एक गौरव की बात है। यह जनजागृति एवं जनचेतना न केवल आम लोगों में आई बल्कि विद्यार्थियों में यह जन चेतना उन्हें उत्तेजित कर स्वतन्त्रता आन्दोलन और स्वाधिनता एक दूसरे के पूरक बने एवं विद्यार्थीयों को भी शैक्षिक चेतना का बोध हुआ। इससे प्रेरित होकर उनमें बल स्वःवर्धक उत्तेजक पक्षों ने उनके मन मानस में चेतन्यता का चिराग जलाया। स्वतन्त्रता के बाद चेतना के इस माध्यम ने नूतन ज्ञान–विज्ञान से उदित कर जन सामान्य को अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों के सम्पादन हेतु आहूत किया। राष्ट्र उन्नति में सर्वस्य आहूति देने हेतु इन्हीं पक्षों द्वारा बुद्धिजीवियों को उत्प्रेरित किया। इन्हीं समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय एवं मानवीय (सामाजिक) मूल्यों से सन्दर्भित होकर देशवासियों में जनतन्त्र, स्वतन्त्रता, समानता, विश्वबन्धुता की भावना का संचार किया।

आज के दौर में सोशल नेटवर्किंग हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है, ज्यादातर लोग तो इसके आदी हो चुके हैं। अगर आपको कोई बात पब्लिक के बीच आसानी से पहुंचानी है तो बस उसे किसी सोशल नेटवर्किंग साइट पर शेयर कर दीजिये। जहाँ सोशल नेटवर्किंग साइट अपने दोस्तों से मिलने का एक बहुत अच्छा साधन है वहीं दूसरी ओर यहाँ आप गंभीर मुद्दों पर चर्चा भी कर सकते हैं और लोगों की राय भी ले सकते हैं। आजकल तो बड़े–बड़े आन्दोलन भी सोशल नेटवर्किंग साइट से ही शुरू होते हैं।

वर्तमान सन्दर्भ में मल्टीमीडिया एक महत्वपूर्ण आम माध्यम है। दूरदर्शन आज जन जन में लोकप्रिय सिद्ध हो रहा है। दूरदर्शन पर विज्ञापित एवं प्रचारित विज्ञापनों की महत्ता स्वयंसिद्ध है सच तो यह है कि दूरदर्शन को लोकप्रियता की धुरी पर यह विज्ञापन ही घूमा रहे हैं। ये विज्ञापन दूरदर्शन विभाग आर्थिक भित्ति की पुष्ट नींव ही नहीं हैं अपितु विज्ञापन दाताओं के लिए अपरिमित आर्थिक उपलब्धि के अपव्यय के प्रभावशाली स्त्रोत भी हैं। मनोरंजन की कामना रखने वाला औसत भारतीय, युवा से युवातर होता जा रहा है। यह एक सकारात्मक परिद्रश्य है इसके अलावा विदशों में रहने वाले दो करोड़ से अधिक भारतवंशी निरन्तर मनोरंजन की ओर उन्मुख हो रहे हैं। विश्वस्तर पर भारतीय विशयवस्तु, कथा और कलाकारों, अन्तराष्ट्रीय फिल्मों की संख्या और स्वीकृति बने के लिए कुछ प्रमुख कारकों को गहराई से देखना उपयोगी होगा। टेलीविजन माध्यम में विभिन्न शैलियां अपने जीवन–चक्र की विविध अवस्थाओं में हैं। बच्चों के मनोरंजन और शिक्षा के क्षेत्र में हाल के समय में अनेक चैनलों का आगमन हुआ है समाचारों के क्षेत्र में भी पिछले कई वर्श में कई नये चैनल आ गए हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन का महत्व.

शिक्षा के क्षेत्र में हुए अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप शिक्षा भी विज्ञान की तरह और अधिक परिष्कृत हुई है। शिक्षा में विज्ञान के नये–नये आयाम तथा प्रतिमान स्थापित किये हैं। शिक्षा में सोशल नेटवर्क के माध्यम से शिक्षा एक अनौखा प्रयोग शुरू हुआ, जिसमें सम्पूर्ण समाज एक विद्यालयी चौपाल सा बन गया है। दूरदर्शन से शैक्षक कार्यक्रम 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' (यू.जी.सी) से यह प्रमाणित हो रहा है। शिक्षा जगत में होने वाले दूरदर्शन के कार्यक्रम के सभी शैक्षिक कार्यक्रम जिसमें व्यावसायिक शिक्षा, कृषि, उद्योग, तथा ज्ञान विज्ञान सभी विशयों को जोड़ते हुए आम लोगों की दूरी कम हुई। सोबल नेटवर्क के द्वारा सभी स्तर के बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम बनाना तथा उसे प्रमाणित करना महत्वपूर्ण कार्य हो गया है। सोशल नेटवर्क केवल मनोरंजन का माध्यम ही नहीं बल्कि यह सभी वर्ग के लोगों के लिए विशेष रूप से किशोरों के लिए उनकी आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यक्रम के अनुसार नवीनतम जानकारी दी जाने वाली और समाज में विद्यालय के अतिरिक्त एक और विद्यालय (मीडिया) एक नया आयाम स्थापित हुआ। शहरों में इलेक्ट्रोनिक मीडिया में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के जुड़ जाने से यह और अधिक अपरिहार्य बन चुका है। ग्रामीण परिवेश में यद्यपि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अभी अपने प्रारम्भिक दौर से गुजर रहा है फिर भी गाँव से शहर में प रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि व्यावसायिक विज्ञापन वह सब कुछ भी दिखा रहे हैं जैसा दिखाया जा रहा है या विज्ञापित किया जा रहा है। मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क ने आज विश्व के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिए आज कोई भी व्यक्ति एक दूसरे से कहीं से भी सम्पर्क कर सकता है।

अध्ययन के उद्देष्य

1. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का अध्ययन करना।
3. सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का अध्ययन करना।
4. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अमितेश कुमार सिंह (2017) वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के नित नये अविष्कारों ने मानव जीवन शैली को बदल दिया है। मानव विकास का जितना पुराना सम्बन्ध सभ्यता और संस्कृति से है, उतना ही सूचनाओं के आदान–प्रदान एवं उनके संग्रहण से है। मानव हमेशा ही सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु नवीन तरीकों को खोजने में शोधरत् रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की खोज एवं उपयोग आधारभूत परिवर्तन लेकर आया है। आज सूचना एवं संचार तकनीक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। आईसीटी ने ज्ञान के संकलन, संचरण एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप जाग रहे है या सो रहे है बल्कि यह महत्व रखता है कि आप ऑफलाइन है या आनलाइन। मौजूदा समय में अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी एक आवश्यक उपकरण के रूप में सामने आया है। राष्ट्रीय एवं विश्व स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए विषय–वस्तु और शिक्षण प्रक्रिया के तौर–तरीकों में भी परिवर्तन की आवश्यकता होने लगी है। शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान व कौशल न केवल शिक्षक को उपयोगी बनाता है, अपितु विद्यार्थियों को ज्ञान का सृजन करने तथा सहायता देने में उपयोगी होता है। अतः शिक्षा में संचार तकनीकी के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार के ज्ञान एवं कौशल विकास की आवश्यकता है। शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में आधारभूत संरचना की कमी, शिक्षकों का तकनीकीमय न होना, परम्परागत शिक्षण पद्धतियाँ, आदि मूलभूत समस्याएँ है। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से शिक्षक–शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित समस्याओं एवं समाधान हेतु सुझावों पर चर्चा की गई है ।

गिरि, टीना (2016) ने ''अभिजात्य एवम सामान्य वर्ग की छात्राओं की विशिष्ट रूचियों, नैतिक मूल्यों, शैक्षिक अभिप्रेरणा एवम् मनोभावों का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। अध्ययन'' इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्श में पाया कि बीकानेर व जयपुर संभाग के सामान्य वर्ग की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है। बीकानेर व जयपुर संभाग के अभिजात्य वर्ग की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया।

अनिता (2014) ने ''कार्यकारी व ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के प्रभाव को प्रभाव का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। अध्ययन'' इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा कार्यकारी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है। शहरी क्षेत्र की कार्यकारी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है। ग्रामीण क्षेत्र की कार्यकारी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

शैक्षणिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है। कार्यकारी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा ग्रहिणी महिलाओं के बच्चे कम समायोजित हो पाते है।

भाटी, राधा (2011) ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर प्रभावों का अध्ययन।'' विषय पर अपना एम.फिल. स्तरीय शोधकार्य करके निश्कर्श में पाया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वाणिज्य, गृहविज्ञान, मानविकी एवं तकनीकी क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा श्रेष्ठ पाई गई जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की कृशि, ललित कला एवं विज्ञान क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि श्रेष्ठ पाई गई। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्रों की कृशि, वाणिज्य, ललित कला, गृहविज्ञान, मानविकी एवं तकनीकी क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ पाई गई जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की विज्ञान क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि श्रेष्ठ पाई गई।

आसेरी, अनुराधा (2010) ने ''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कर निश्कर्श निकाला कि विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर को उच्च करने के लिए मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ्यक्रम प्रभावशाली होते हैं। जो विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा रखते हैं उनके स्तर को छः माह तक मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण दिया जाकर उच्च किया गया। विद्यार्थियों में विद्यालयी विषयों के प्रदर्शन सुधार में मनोवैज्ञानिक शिक्षा पाठ ्यक्रम प्रभावशाली होना पाया गया।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कश निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देष्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अनुसंधान में आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि एवं घटनोत्तर शोध विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा दाहोद (गुजरात) में सर्वेक्षण विधि एवं घटनोत्तर शोध विधि को अपनाया गया है। शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध अध्ययन में उक्त विधि का प्रयोग बिना किसी उपयुक्तता के नहीं किया गया है। सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता को इस शोध अध्ययन हेतु आवश्यक समझा गया। शोधकर्त्री द्वारा जिन आंकड़ों का संकलन प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु किया गया है उनका स्वरूप प्राथमिक है और इस प्रकार के आंकड़ों का संकलन ऐसे स्वनिर्मित उपकरणों द्वारा किया गया है जिनका प्रयोग सर्वेक्षण द्वारा ही किया जा सकता है।

ऑनलाइन प्रश्नावली

शोध और सर्वेक्षण के क्षेत्र में सामग्री एकत्रित करने के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, उनमें प्रश्नावली भी एक है। उत्तरदाताओं में युवा छात्र–छात्रायें, मीडिया से जुड़े प्रोफेशनल, शामिल किये गये। बोगार्डस ने प्रश्नावली को परिभाषित करते हुए लिखा है। प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तिओं को उत्तर देने के लिए दी गई प्रश्नों की एक तालिका है। प्रश्नावली का निर्माण जितना सावधानीपूर्वक एवं सुव्यवस्थित रूप से किया जाता है। शोध के लिए सामग्री का संकलन उतना ही उपयोगी हो जाता है। प्रश्नावली में सूचनादाताओं को स्वयं ही प्रश्नों को समझकर उनका उत्तर देना होता है। प्रश्नावली की रचना को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। आज प्रश्नावली के रूप में बड़े बदलाव सामने आये हैं पहले प्रश्नावली पोस्ट से भेजी जाती थीं, लेकिन आज हम ई–मेल के माध्यम से भी प्रश्नावली प्रेषित कर सकते हैं। ई–मेल के माध्यम से हमें तेजी से प्रश्नों के जवाब प्राप्त हो जाते हैं। अब हमें पहले से बहुत जल्दी अपने प्रश्नों के जवाब प्राप्त हो जाते हैं। वर्तमान में इंटरनेट और टेक्नोलॉजी ने प्रश्नावली को और भी आसान बना दिया है।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकत्री द्वारा सर्वेक्षण विधि एवं घटनोत्तर शोध विधि को अपनाया गया है। शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध अध्ययन में उक्त विधि का प्रयोग बिना किसी उपयुक्तता के नहीं किया गया है। सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता को इस शोध अध्ययन हेतु आवष्यक समझा गया। शोधकर्त्री द्वारा जिन आंकड़ों का संकलन प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु किया गया है उनका स्वरूप प्राथमिक है और इस प्रकार के आंकड़ों का संकलन ऐसे स्वनिर्मित उपकरणों द्वारा किया गया है जिनका प्रयोग सर्वेक्षण द्वारा ही किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध गुजरात राज्य है। शोधकर्त्री ने दाहोद संभाग के जिलों में संचालित सरकारी एवं निजी विद्यालयों को चयनित किया है।

परिणाम एवं विवेचना

आंकड़ों का संकलन कर लेने के पश्चात उनके विष्लेशण का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। किसी भी अनुसंधान की सफलता केवल इस बात पर निर्भर नही करती है कि वह कितनी उपयुक्त एवं विश्वसनीय प्रविधियों के द्वारा आंकड़ों को संकलित किया गया है, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि संकलित किये गये आंकड़ों को किस तरह विश्लेशित किया जाये। प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य है दत्तों का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विष्लेशण करना एवं परिणामों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निश्कर्श ज्ञात करना।

तालिका संख्या – 1 मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

न्यादर्ष	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
छात्र	**150**	**506.65**	**53.56**	**1.89**	.05 स्तर	.01 स्तर
छात्रा	**150**	**509.93**	**58.21**		सार्थक अन्तर नही ं है।	

उपर्युक्त तालिका संख्या – 1 में मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के आधार पर छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 506.65 एवं 53.56 तथा मानक विचलन क्रमषः 509.93 तथा 58.21 दिया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात का मान 1.89 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के अंश 298 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 तथा 2.59 से कम है।

तालिका संख्या – 2 मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

न्यादर्ष	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
छात्र	**150**	**146.65**	**93.14**	**1.49**	.05 स्तर	.01 स्तर
छात्रा	**150**	**179.93**	**98.61**		सार्थक अन्तर नही ं है।	

उपर्युक्त तालिका संख्या – 2 में मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान के प्राप्तांकों के आधार पर छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 146.65 एवं 179.93 तथा मानक विचलन क्रमशः 93.14 तथा 98.61 दिया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा का तिक अनुपात का मान 1.49 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के अंश 298 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 तथा 2.59 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 तथा 0.01) पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 3 सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना

न्यादर्ष	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
छात्र	**150**	**476.95**	**64.14**	**0.90**	.05 स्तर	.01 स्तर
छात्रा	**150**	**439.23**	**59.61**		सार्थक अन्तर नही ं है।	

उपर्युक्त तालिका संख्या – 3 में सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के आधार पर छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 476.95 एवं 439.23 तथा मानक विचलन क्रमशः 64.14 तथा 59.61 दिया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात का मान 0.90 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के अंश 298 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 तथा 2.59 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तालिका संख्या –4 सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रति के व्यवहार प्रतिमान से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों से सम्बन्धित सार्थकता की तुलना

न्यादर्ष	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
छात्र	150	126.52	96.16	0.52	.05 स्तर	.01 स्तर
छात्रा	150	129.96	93.34		सार्थक अन्तर नही ं है।	

उपर्युक्त तालिका संख्या –4 में सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान के प्राप्तांकों के आधार पर छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 126.52 एवं 129.96 तथा मानक विचलन क्रमशः 96.16 तथा 93.34 दिया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के मान के आधार पर गणना द्वारा का ंतिक अनुपात का मान 0.52 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतन्त्रता के अंश 298 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 तथा 2.59 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश उपयोगकर्ता सोशल मीडिया नेटविर्कंग साइट जैसे– फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, इंस्टाग्राम आदि का प्रयोग कर रहे हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि बहुत कम लोग ही माइक्रो ब्लॉगिंग साइट का ट्विटर का उपयोग कर पा रहे हैं, सबसे ज्यादा सोशल मीडिया उपयोगकर्ता फेसबुक पर सक्रिय हैं। मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले सरकारी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले सरकारी छात्रों की अपेक्षा सरकारी छात्राओं के मध्यमान कम है। मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के मध्यमान कम है। सोशल नेटवर्क सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि औसत स्तर की पायी गयी, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के मध्यमान कम है। सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले सरकारी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। मध्यमानों के आधार पर सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले सरकारी छात्रों की अपेक्षा सरकारी छात्राओं के मध्यमान अधिक है। सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार प्रतिमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के मध्यमान कम है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय सहारा दैनिक समाचार पत्र, कानपुर संस्करण, 13 फरवरी 2016.
2. मीना एवं पारीक, कल्पना (2015), सूचना व संचार प्रौद्योगिकी से शिक्षा का बदलता स्वरूप, अन्वेषिका, जनवरी 2015, नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी., पृष्ठ संख्या 39 – 47.
3. जायसवाल, विजय (2014), दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के निहितार्थ एवं समस्याएं, परिप्रेक्ष्य, अप्रैल 2014, नई दिल्लीः न्यूपा, पृष्ठ संख्या 111–122
4. अहमद, एस.एण्ड सिंह, एम. (2010), मल्टीमीडिया इन टीचर एजूकेशन इम्पावरिंग एक्सेसीवल, फ्लेक्सीवल एण्ड इनोवेटिव लर्निंग, शिक्षक शोध पत्रिका, वाल्यूम 4 (1) पेजेज– 32–33
5. भाटी, राधा, 2011 एम.फिल. शोधकार्य, आईएएसई मान्य वि.वि., गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर,
6. अनिता (2014) – पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, जे.जे.टी. विष्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझनूं, राजस्थान
7. गिरी, टीना (2016) – पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुंझनूं, राजस्थान
8. शर्मा, अनुपम (2011) – पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर सरदारशहर, चूरु, राजस्थान
9. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जूलाई–दिसम्बर 2008, पृ. सं. 23
10. राष्ट्रीय सहारा दैनिक समाचार पत्र, कानपुर संस्करण, 13 फरवरी 2016.

RRIJM 2015, All Rights Reserved